e-ISSN:2582-7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 6, Issue 2, February 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.54

International Journal Of Multidisciplinary Research In Science,Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 6, Issue 2, February 2023|

|DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602025|

भक्त कवियों की कलम से सृजित नारी की छवि

डॉ० मोनिका नरेश

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,

दयानन्द महाविद्यालय, हिसार

E-mail: nkmksk@rediffmail.com

सार : भक्ति युगीन काव्य में नारी सामाजिक एवं पारम्परिक बद्धता में रहते हुए सम्माननीय है किन्तु वासना प्रसवित कमनीयाचरण के कारण निन्दनीय है। उपास्य देवी सीता के रूप में सम्माननीय है तो पापाचरण करने वाली ताड़का के रूप में वधनीय अर्थात् वध के योग्य भी है। राधा के रूप में नारी प्रेम की पराकाष्ठा है व गोपियों के रूप में कर्मशीलता की परिचायक है। पद्मावती ईश्वर मिलन हेतु बुद्धि की परिचायिका है और नागमती रूप में दुनिया धंधा का प्रतीक बनती है। भक्ति भावना से ओत–प्रोत यह साहित्य जन्म के आधार पर सगुण और निर्गुण दो धाराओं में बंट जाता है। सगुण काव्यधारा राममार्गी एवं कृष्णमार्गी कें रूप में बंट कर क्रमशः श्री राम एवं श्री कृष्ण को अवतरित भगवान के रूप में पूजने लगी। निर्गुण काव्य धारा भी ईश्वर प्राप्ति के साधन, ज्ञान व प्रेम के आधार पर दो भागो में विभाजित हुई। ज्ञानाधारित संत व प्रेमाधारित सूफी कहलाए और उनका काव्य क्रमशः ज्ञानमार्गी शाखा अथवा संत काव्य और प्रेममार्गी शाखा अथवा सूफी काव्य के रूप में हिन्दी साहित्य में लिपिबद्ध हुआ।

Keywords : भक्त–कवि, भक्ति, नारी, संत, सूफी, कृष्ण, राम।

मध्यकालीन आक्रमणों में हुई पराजय जनक निराशा एवं मॉसल–प्रेम से ऊबने के कारण मानव स्वयं को किसी ऐसी सत्ता के हाथों सौंप देना चाहता था जहाँ उसे पूर्ण सुरक्षा, पूर्ण आत्मविश्वास व जीवन प्रेरणा प्राप्त हो सके।

कोई ऐसी सत्ता जो हमेशा उसकी रक्षा करे, उसे ऊर्जा प्रदान करे, जो सर्वत्र, सर्वज्ञ, सर्वांतयामी, सर्वशक्तिमान, अद्वितीय हो व सदैव उसके अंग–संग हो। अपनी इस मानसिक जरूरत को विचारों का जामा पहना कई जीवनोपयोगी सिद्वान्तों का सृजन हुआ। कभी वह किसी व्यक्ति विशेष का आलंबन लेता तो कभी उस सत्ता को अप्रत्यक्ष रूप से महसूस करता। मनोवैज्ञानिक सत्य है कि मनुष्य जैसे वातावरण में रहता है वैसे

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 6, Issue 2, February 2023|

|DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602025|

सोचने–विचारने लगता है, अर्थात् हमारी कल्पना हमारे सपने हमारे प्रत्यक्ष जगत का परिणाम होते हैं। ईश्वर सृजित सम्पूर्ण सृष्टि नर और नारी दो ही रूपों में सर्वत्र व्याप्त है। जहाँ तक हम इस ऊर्जा को व्यक्ति विशेष के रूप में स्वीकार करते हैं, वहाँ तक तो उसकी रूपरेखा नाम धाम गौरव सभी कुछ व्याख्याथित रहते हैं। किन्तु जब यह सत्ता अर्थात् ऊर्जा अप्रत्यक्ष रूप में सम्बोधित होती है तब भी मनोवैज्ञानिक सत्यानुसार दो ही रूपों में अर्थात् नर व नारी रूप में रूपायित होती है किन्तु इसका रूपायन नहीं होता। इसकी कल्पना के लिए मनुष्य अपने शरीर में निहित अप्रत्यक्ष सत्ता का आलंबन लेता है। यह अप्रत्यक्ष सत्ता जीवन के दो आधारों में रूपायित होती है और वे आधार हैं हमारी भावनात्मकता और बौद्धिकता, जिसमें नारी भावात्मक एवं नर बौद्धिक रूप में जिन्दगी को जीता है। इसलिए कुछ उस अप्रत्यक्ष शक्ति को भावात्मक अर्थात् नारी रूप में और कुछ बौद्धिक अर्थात् पुरूष रूप में स्वीकारते हैं। यही हमारे भक्तिकालीन साहित्य का आधार है। हमारा जन्म व जीवन ही इस सृष्टि के वजूद का आधार है। हम इसे रूप रंग के आकार में ही समझते हैं। लौकिकता में आलौकिक सत्ता का निर्वहन ही अवतारवाद को जन्म देता है और हमारे भक्ति साहित्य में सगुण परम्परा को बल मिलता है। जो श्री राम एवं श्री कृष्ण को उस परम सत्ता का अवतार मानती है? और जो परमात्मा को दैहिक रूप मे स्वीकारने की अवमानना करते हैं वे उसे ज्ञान व प्रेम से पाने का समर्थन करते हैं जिससे भक्ति साहित्य में संत एवं सूफी धाराओं का प्रणयन होता है। भक्ति भावना से ओत–प्रोत यह साहित्य जन्म के आधार पर सगुण और निर्गुण दो धाराओं में बंट जाता है। सगुण काव्यधारा राममार्गी एवं कृष्णमार्गी कें रूप में बंट कर क्रमशः श्री राम एवं श्री कृष्ण को अवतरित भगवान के रूप में पूजने लगी। निर्गुण काव्य धारा भी ईश्वर प्राप्ति के साधन, ज्ञान व प्रेम के आधार पर दो भागो में विभाजित हुई। ज्ञानाधारित संत व प्रेमाधारित सूफी कहलाए और उनका काव्य क्रमशः ज्ञानमार्गी शाखा अथवा संत काव्य और प्रेममार्गी शाखा अथवा सूफी काव्य के रूप में हिन्दी साहित्य में लिपिबद्ध हुआ।

नारी विचार–विषमता और सगुन–निर्गुण के विचारों ने भक्ति की प्रवाहिणी को चार धाराओं में विभाजित किया। भक्तिकाल की संज्ञा से अलंकृत इस काल में भक्ति–पथ पर अग्रसर होने के लिए नर ने नारी को बाधा माना, क्योंकि सृष्टि के मूल में काम है। सृष्टि ईश्वर की कामना की परिणति है। यह नर–नारी मय है।'' एकाकी जीवन यापन की कल्पना निराधार है। काम जीवन का अनिवार्य सत्य है।[1] मोक्ष मार्ग में सफलता पाने के लिए व अपने मन में नारी के प्रति विकर्षण के भाव पैदा करने के लिए पुरूष ने नारी के प्रति

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 6, Issue 2, February 2023|

|DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602025|

कुभावों का संचय किया। नर–नारी मय इस सृष्टि में आत्मा और परमात्मा को भक्तजनों ने नर–नारी रूप में वर्णित किया है।

1. संत काव्य में नारी की भूमिका –

जिन भक्तजनों ने नर को परम सत्ता परमात्मा और नारी को जीवात्मा के रूप में स्वीकार किया, वे संत–काव्य (ज्ञान मार्गी शाखा) के सन्त कवियों में अग्रगण्य हुए। इस समूचे काव्य के शिरोमणि संत कवि कबीर एवं नानक प्रभृत सन्त मान्य हैं। जीवात्मा के रूप में संकल्पित नारी कभी परम पुरूष परमात्मा के लिए तड़पती है, कभी इन्हें पूर्ण समपर्ण करती हैं तो कभी अपने को निःकृष्ट मानकर सामने उपस्थित प्रियतम से मिलने में भी हिचकिचाती है। सन्त कवियों ने नारी को कहीं माता की भूमिका में, कहीं सती की भूमिका में, कहीं पत्नी तो कहीं कामिनी, कुल्टा वेश्या के रूप में प्रस्तुत किया है। संत–काव्य में नारी के विभिन्न और विषम रूप रूपायित हुए हैं।

क. नारीः माता की भूमिका में –

सन्त–काव्य में ''माँ'' की ममता ने तीन रूपों में अभिव्यक्ति पाई हैः जगत जननी, सामान्य जननी और विशिष्ट चरित्र के रूप में कबीर जननी। स्वयं को बालक मानकर कबीर अपने उपास्य देव को माँ के रूप में स्वीकार कर अपने समस्त अपराध हरि जननी के वात्सल्यमयी आँचल से पोंछ लेना चाहते हैं और स्वयं पाक होना चाहते हैं।

''हरि जननि मैं बालक तेरा, काहे न अवगुण बकसहु मेरा।
सुत अपराध करै दिन के ते, जननि के चित रहें न ते ते।
कर गहि केस करै जो घाता, तऊ न हेत उतारै माता।
कहै कबीर इक बुद्धि बिचारी, बालक दुःखी–दुःखी महतारी।''[2]

भक्त नामदेव भी इसी सम्बन्ध की पुष्टि करते हैं :

''जैसी प्रीत बाल अरू माता''[3]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 6, Issue 2, February 2023|

|DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602025|

माँ का जीवन तभी सार्थक हो पाता है जब वह वैष्णव भक्त जन की माँ बनती है अन्यथा वह अपने नूर को व्यर्थ करती है। साकत की माँ से तो वैष्णव की कुतिया भली है क्योंकि उसके पास मानव जन्म नहीं किन्तु सन्तों का संसर्ग तो है।

''बैस्नों की कुकरि भलि साकत की बुरी माइ।
वह बैठी हरि जस सुनै, वह पाप बिसाहन जाइ।।[4]

कबीर (विशेष पारिवारिक सम्बन्धों में) की माता की चिन्ता अपने परिवार के भरण–पोषण तक ही सीमित है।

''तनना बुनना'', तत्यौ कबीर। राम नाम लिखि लयौ सरीर।। (ढेक)
मुसि मुसि रोवै कबीर की माई। ए बारिक कैसे जीवहि खुदाई।।
जब लगि तागा बाहै बेही। तब लगि बिसरै राम सनेही।।
कहत कबीर सुनहू मेरी माई। पूरनहारा त्रिभुवन राई।।[5]

<u>नारी : पत्नी भूमिका में</u> :

माँ–पुत्र की तरह पति–पत्नी का सम्बन्ध भी पावन व पवित्र है यह गृहस्थ का आधार है और सृष्टि विकास का बीज रूप है। नर और नारी दोनों ही अपनी–अपनी इयत्ता रखते हैं। इस युग में आर्थिक रूप से नारी पुरूषाश्रित थी लेकिन उसके जीवन में किसी भी प्रकार के अभाव का कारण उसका पति ही माना जाता था, वह इसके लिए उत्तरदायी नहीं थी। पतिव्रता तो नग्न भी रहे, तो भी इसके सतीत्व को कभी आँच नहीं आती। लाज आती भी है तो उसके पुरूष को, उसे नहीं।

''उस संमृथ का दास हूँ, कबहू न होइ अकाजे।
पतिव्रता नांगी रहे, तो इसकी पुरिख को लाज।।

सन्त कवियों ने स्त्री का महत्व इसके यौन सदाचार और पति–प्रेम पर आंका है।

''नौसत साजै सुन्दरी तन मन रही संजोइ
पिय के मन भावै नहीं, तो पटम किए क्या होई।''[6]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 6, Issue 2, February 2023|

|DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602025|

वह तो तन–मन–धन प्रियतम को सौंप कर उत्सर्जन के लिए निकली है। नारी का सम्पूर्ण समपर्ण इस युग में नारी की श्रेष्ठता का परिचायक है। वह शारीरिक और मानसिक रूप से अपने पति से कुछ भी छिपा कर नहीं रखती।

"सती जरन को नीकसी, चित्त थरि विवेक।
तन–मन सौंप पीव को, अंतरि रही न रेख।।"[7]

नारी : कामिनी रूप में :

पतिव्रता व सती के रूप में जहाँ उसकी प्रशंसा हुई है वहीं कुलटा व कामिनी के रूप में वह भर्त्सना की पात्रा भी बनी है। ऐसा माना जाता है कि सामान्यतः नारी का कामिनी, कुटिल रूप ही सन्त कवियों को ध्येय रहा है। इसके सुष्ठु रूप पर वह अपने ध्यान को केन्द्रित नहीं कर पाए। उनके अनुसार वह जिस पुरूष का संग करती है वह भक्ति और ज्ञान से शून्य हो जाता है।

"नारि नसावै तीन गुण, जा नर पासै होई।
भंगति, मुकुति निज ग्यान, में पैसि न सकई कोए।"

इनके अनुसार उससे प्रीति करने वाले नरक की ओर उन्मुख होते हैं। सुन्दरी से शूल अच्छी है। कनक और कामिनी दोनों ही त्याज्य हैं। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं हैं क्योंकि नारी को अपनी माँ के रूप में आदर देने वाले संतजन नारी को निंदनीय कैसे बना सकते हैं। नारी के प्रति पुरूष की दृष्टि ही पुरूष की उन्नति और अवनति का आधार बनती है।

"एक कनक और कामिनी दोऊ अगनि की आग।
देखत ही तन प्रजलै परस्यां हवै पामाल।।"[8]

नारी का कामुक एवं कमनीय रूप पुरूष की दृष्टि का परिणाम है। जब वह उसे माँ की दृष्टि से देखता है तो वह उसके लिए उसका पोषण करती है, जब बहन की दृष्टि से देखता है तो उसके लिए शुभकामना करती है जब पत्नी के रूप में देखता है तो गृहस्थ का आधार बनती है। किन्तु जब मात्र भोग–पिपासा की शांति हेतु उसका संग करता है तभी अवनति की ओर बढ़ता है। वास्तव में सन्त कवि केवल नारी को नहीं अपितु मोह–माया में लिप्त दोनों (नर–नारी) को ही निंदनीय मानते रहे हैं –

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 6, Issue 2, February 2023|

|DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602025|

"नर–नारी सब नरक है, जब लागि देह सकाम।
कहै कबीर तै राम के, जे सुमिरै निह काम।।"[9]

कामनीय नर–नारी निन्दा के पात्र हैं किन्तु सती को इन्होंने अत्याधिक सम्मान दिया है। उनके अनुसार उसके सतीत्व के समक्ष दुनियां की हर वस्तु हेय है, तुच्छ है –

"पतिव्रता मैली भली, काली कुचित कुरूप।
पतिव्रता के रूप पर, बारों कोटि सरूप।।"[10]

ग. <u>नारीः प्रेम सम्बन्धों की भूमिका में</u> –

सन्त कवियों ने काम वासना को भक्ति पथ का बाधक माना है किन्तु इन्होंने जिस भक्ति भावना का वरण किया है वह सामान्य दाम्पत्य सम्बन्ध को प्रतिमान मान कर उभरती है। भक्ति क्षेत्र में आत्मा एवं परमात्मा क्रमशः पत्नी और पति का सम्बन्ध धारण करते हैं–

"मैं तो तुम्हारी दासी हो, सजनां तुम हमारे भरतार।
दीन दयाल दया करि आवो, समरथ सिर जन हार।।"[11]

सन्त कवियों ने भक्ति आत्मा के लिए सुन्दरी, सुहागिन और ईश्वर के लिए खसम, कन्त व पीव जैसे शब्दों का प्रयोग किया है–

"धन्नि सुहागिन जो पिय भावै। कह कबीर फिरी जन्म न आवै।।"[12]

कभी–कभी भावना की पराकाष्ठा पर कबीर स्वयं को नारी की भूमिका में महसूस करते हैं। स्वयं को नारी मान कर सहज सम्बोधन करते हुए सन्त कबीर–

"कबीर सुंदरि यो कहै, सुनि हो कन्त सुजान।
देखत ही तन प्रजलै, परस्यां हवै पामाल।।"[13]

प्रतीक्षारत कबीर सुन्दरी की आत्मा प्रिय मिलन के लिए विह्वल है, इसके अंग भी शिथिल हो गए हैं। किन्तु पिय मिलन की इच्छा आज भी उत्कण्ठित है –

"कबीर देखत दिन गया, निस भी देखत जाइ।
बिरहवि पिव पावै नहीं, जिय रा तलयै माइ।।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 6, Issue 2, February 2023|

|DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602025|

यहि तन का दिवला करौ, बाती में लौ जीव।
लौहू सींचौ तेल ज्यों, कब मुख देखौ पीव।।''[14]

राम–प्रिय से मिलन के अवसर पर जीवात्मा रूपी प्रेमिका का उल्लास भी सन्त कवियों से अछूता नहीं रहा–

''दुल हिनी गावहु मंगलाचार।
रामदेव मोरे माहुन आए, हौ जीवन मदमाती।''[15]

पिय मिलन पर आत्म–ग्लानि में अपनी हेयता के कारण वह प्रिय से मिल नहीं पाती। उसे अपनी लघुता का अहसास –

''हरि मेरा पिउ, मैं हरि की बहुरिया।
राम बड़े मैं तनक लहुरिया।।''[16]

नर–नारी के मिलन की उत्कट अभिलाषा प्रकट अवश्य हुई है किन्तु यह अभिलाषा आध्यात्मिकता के आवरण में लिपट कर प्रस्तुत हुई है –

''बाल्हा आव हमारे गेह रे, तम बिन दुखिया देह रे।
सब कोउ कहै तुम्हारी नारी, मोकौ इहै अदेह रे।
एक मेरू हवें सेज न सौवे, तब लग कैसा नेह रे।
आन न भावै, नींद न आवै, ग्रिह बन धरै न धीर रे।
ज्यूँ कामी को कम पियारा, ज्यों प्यासे को नीर रे।
है कोई ऐसा पर उपकारी, हरि सूँ कहै सुनाई रे।
ऐसे हाल कबीर भए है, बिन देखे जीव जाई रे।।''[17]

उपर्युक्त पद नर–नारी के विरह की उत्कट तड़पन और मिलन की तीव्रता को लिपिबद्ध किए है। एक मेरू ह्वें .....'' पंक्ति की वासना जन्य कामुकता लौकिकता का वर्णन करती है। हरि को किया गया सम्बोधन इस लौकिकता को आलौकिकता की आध्यात्मिक भूमि पर खड़ा करता है। लौकिक स्तर पर वर्ज्य काम भावना आलौकिक स्तर पर ग्राह्य है क्योंकि यहाँ वह उस भुने हुए बीज के समान है जिससे कभी अंकुर नहीं फूटता। फिर भी लौकिक स्तर पर वर्जित आलौकिक पर ग्राह्य काम भाव सन्तों के मन के अन्तर्विरोध को प्रकट करता है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 6, Issue 2, February 2023|

|DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602025|

घ. **नारीः माया की भूमिका में –**

जीव को सांसारिकता में लिप्त कर माया उसे ईश्वर से विमुख करती है। सन्त साहित्य में कई स्थानों पर माया को नारी रूप में चित्रित किया गया है। माया एक ऐसी सुहागिन नारी है –

''एक सुहागिन जगत पियारी, सगले जीअ जंत की नारी।
खसम मरै तो नारी न रोवै, उस रखवारा अडरौ होवै।
रखवारे का होइ विनास, आगै नरक इहाँ भोग विलास।।''[18]

स्पष्टतः माया ऐसी कामिनी स्त्री के रूप में उपस्थित हुई है जो संसार को प्रलुब्ध कर भोग विलास में लीन कर देती है–

''माया महाठगिनी हम जानी।
तिरगुन फाँस लिए कर डोलै, बोलै माधुरी बानी।।''[19]

कबीर जी ने माया को डाकिनी के रूप में चित्रित किया है जो सत्व लूट लेती है उन्हें खा जाती है–

''कबीरा माया डाकिनी, सब काहु कौ खाइ।
दांत उपारूंपा पापिनी, जै संतों नियरे जाइ।।''[20]

संत कवियों द्वारा चित्रित नारी का रूप उन द्वारा वर्णित पतिव्रता नारियों का विलोम है क्योंकि वह विलास, प्रलोभन और छल का पर्याय ही बन पाई है। कुलटा के लिए सन्त कवियों की धारणा माया के रूप में मूर्त हुई है और इसके प्रति निन्दापरक और आक्रोशपूर्ण भाव प्रकट किए हैं–

2. **सूफी काव्य में नारी की भूमिका –**

सन्त कवियों के विपरीत जिन्होंने जीवात्मा को पुरूष और परमात्मा से समागम करवाने में सहायक ''धी'' को नारी रूप में चित्रित किया है वे सूफी कवियों के नाम से साहित्य दर्पण में अपना परिचय पाते हैं। जायसी इस काव्यधारा के प्रवर्त्तक कवि हैं। नारी का चित्रण उदात्त प्रेमिका के रूप में हुआ है। इस धारा के काव्यग्रंथ नायिका प्रधान रहे हैं। उन्होंने नारी सौन्दर्य की उन्मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। 'हंसावली', 'चन्दायन', 'लखनसेन', 'पद्मावती कथा', 'सत्यवती कथा', 'मृगावती', 'माधवानल', 'कामकन्दला', 'पद्मावत', 'मधुमती', 'रूपमंजरी', 'प्रेमविलास', 'प्रेम लता कथाएं', 'छित्तई वार्ता', 'चित्रावली', 'नलदमयन्ती' इत्यादि

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 6, Issue 2, February 2023|

|DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602025|

आख्यान प्रभृत कथा काव्य नारी स्थिति का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। नारी पात्रों पर आधारित इन महाकाव्यों में नारी का प्रेमिका रूप मान्य है। यही नारियाँ पारिवारिक परिप्रेक्ष्य में आदर्श पत्नियाँ प्रमाणित होती हैं। प्रारम्भ में कामोन्माद, रूपगर्व एवं स्वार्थपरता के हाथों बिकी यह नारी नायक वर्ग का त्याग समर्पण पाकर उदात्त गुणों का समाहार करती है। इस प्रकार दो विपरीत ध्रुवान्तों से जुड़ कर नारी जीवन की सार्थकता को प्रमाणित करती है। जायसी ने पद्मावती को ''धी'' और नागमती को ''दुनिया–धन्धा'' के रूप में वर्णित किया है। इसका प्रमाण इन्हीं के पद्मावत की निम्न पंक्तियाँ हैं जहाँ वे सम्पूर्ण काव्य को रूपक में बांधने का प्रयास करते हैं–

''तनचितउर मन राजा कीन्हा, हिय सिंहल बुधि पद्मिनी चीन्हा।
''नागमती यह दुनिया धन्धा, बाँचा सोई न एहि चित बंधा।''[21]

पद्मावती एक उदात्त प्रेमिका है। अपने प्रेमी के लिए भेजे सन्देश में इसके जीवन की सारी मार्मिक व्यथा घुल कर पावन हो उठी है। नागमती भारतीय नारी की परम्परा का साक्षात् प्रमाण है। वह सर्वस्व जानकर भी पति प्रेम में उलझी है। पति–वियोग में पति की कथा–वाचन करने वाले व्यक्ति की दासी बनना भी उसे स्वीकार है।[22] "जायसी ने नागमती के हृदय की सम्पूर्ण कायरता, दीनता पति के प्रति निष्ठा और सच्चे प्रेम में आत्मबलिदान की उत्कट हृदयस्पर्शी अभिलाषा का हृदयग्राही वर्णन किया है।''[23]

स्पष्टतः नारी का यह चित्रण प्रेम तत्व की अतिशय सूक्ष्मता, तरलता और गम्भीरता को समझने समझाने में जितना सहायक है, इतना अन्यतर नहीं। प्रेम के व्यापक स्वरूप के साथ यह काव्य नारी की सामाजिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों का अंकन नहीं कर पाया।

3. कृष्ण–काव्य में नारी की भूमिका –

लीला पुरूषोत्तम कृष्ण का भक्ति–भावना से ओतप्रोत काव्य कृष्ण–काव्य के नाम से विख्यात है। इस काव्य में सूफी–काव्य की तरह नारी का एकांगी चित्रण न होकर अनेक भूमिकाओं में उसे रूपायित किया गया है।

(क) नारीः माता की भूमिका में –

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 6, Issue 2, February 2023|

|DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602025|

कृष्ण मैय्या : यशोदा : कृष्ण–काव्य में यशोदा और कीर्ति का वर्णन आदर्श माता के रूप में हुआ है। ''माँ की भूमिका में यशोधा वात्सल्य की साक्षात् एवं पूर्ण प्रतिमा है। कृष्ण की मोहिनी छवि के मनोहर दर्शन ही उसके जीवन के अनमोल क्षण हैं। वह ईश्वर रूप कृष्ण को पालने में झुलाती, सुलाती, खिलाती ब्रह्म सुख की अनुभूति करती है।[24] माँ अपने पुत्र की खुशी के लिए झूठी सौगन्ध भी खाती है। जब दाऊ कृष्ण को विपुत्र कह खिजाता है तो यशोधा गोधन की सौगन्ध ले अपने मातृत्व का प्रमाण देती है –

''सूर स्याम मोहि गोधन की सौ, हौ माता तू पूत।''[25]

(ख) <u>राधा की मैय्या : कीर्ति</u> –

कृष्ण को जितना प्यार और दुलार पुत्र रूप में माँ यशोधा से मिला है इतना ही लाड–प्यार राधा को अपनी माँ कीर्ति से मिला है। इसके जन्म अवसर पर इसके पिता को मिली बधाई और गाए गए बधाई गीत समाज में कन्या की स्थिति का चित्र खींचते हैं। गाए गीतों से यह प्रमाणित हो जाता है कि कन्या जन्म को अशुभ नहीं मानते थे –

''श्री वृषभान नृपति के अंगनि, बाजति बाजु बधाई।
कीरती देरानी सुख–सानी, सुता सुलच्छिन जाई।''[26]

राधा को माँ यशोदा और माँ कीर्ति द्वारा दिए गए उपदेश समाज में लड़की की तत्कालीन स्थिति का अंकन करते हैं –

''हब राधा तू भई सयानी, मेरी सीख मान हृदय धरि, जहं तहं डोल बुद्धि अयानि।''[27]

(ग) <u>नारीः पत्नी की भूमिका में</u> –

गोपियों के प्रेम–प्रसंगों को कई विद्वान पत्नी आदर्शों पर हुआ प्रहार मानते हैं। किन्तु पूर्णतया ऐसा नहीं है। सूरदास जी ने स्वयं ही अपने काव्य में पत्नी के कर्त्तव्यों का अंकन किया है। इनके अनुसार पर पुरूष का अनुगमन करने वाली नारी कुलटा है। वह मरणोपरान्त तो नरक की भागीदार बनती है और जीवन काल में भी समाज निन्द के कारण बार–बार मृत्यु का साक्षात् करती है।

''तजि भरतार और जो भजिए, सो कुलीन नहीं होई।
मरे नरक जीवित या जग में, भलो कहै नहिं कोई।''[28]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 6, Issue 2, February 2023|

|DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602025|

इस युग में पुरूष को परमात्मा कहा जाता रहा तो पति को पुरूष होने के कारण परमेश्वर कहा गया। परमेश्वर अर्थात् ऐश्वर्य का स्वामी। पत्नी का कर्त्तव्य पति कथन का उल्लंघन नहीं है। इसका कर्त्तव्य पति को देवता मानकर इसकी आराधना करना है –

''अज तुम भवन जादु पति, पूज्हू परमेशवर की नाई।''[29]

(घ) नारीः प्रेमिका की भूमिका में –

कृष्ण–काव्य में ''राधा'' की अवधारणा प्रेमिका के रूप में हुई है उसकी कल्पना भारतीय काव्य और दर्शन की महत्तम उपलब्धि है। वह उसका राधा भाव परकीया भाव भी है अर्थात् कृष्ण–काव्य में नारी की यह काल्पनिक मुद्रा में वह न तो नायिका है और न ही कुलवधू, न पतिव्रता है और न ही अबला, न अविवाहिता है और न ही बंदिनी है। वह है – मात्र प्रकृति। वह तारूण्य और लावण्य की मनोरम मूर्ति, भक्ति और अनुरक्ति की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति, प्रेम भक्ति की अपूर्व निधि है। वह सोलह हज़ार गोपियों की प्रतिनिधि रूपा है। पं. बलदेव उपाध्याय के शब्दों में ''राधा कोई मृण्मयी मूर्ति नहीं'', वह चिन्मयविग्रहवती है। वह पार्थिव प्रतिमा नहीं, पराशक्ति का प्राकट्य है। राधा भारतीय वाङ्क्मय के सरोवर में प्रस्फुटित होने वाली सर्वश्रेष्ठ कनक–कंजकलिका है। वह काव्य की अधिष्ठात्री है, भक्ति की निर्झरिणी है, कला की उत्स है और प्रेम की प्रतिमा है। भारतीय वाङ्मय इस नारी–रत्न की छाया व्यतिकर, सौन्दर्य सृष्टि से अनुप्रमाणित है। गोपियाँ भी कृष्ण से एकान्तिक प्रेम करती हैं और वह ही इनका सर्वस्व है। जो कुछ भी इनके पास था वे दे चुकी हैं। आज किसी और को देने के लिए इनके पास कुछ भी शेष नहीं है –

''उद्धौ मन नाहिं दस बीस।
एक हुतो सो गयो स्याम संग, कौ आराधै ईस।।''[30]

4. राम काव्य में नारी की भूमिका –

मर्यादा पुरूषोत्तम् दशरथ नंदन राम के उपासक भी नारी के प्रति विभिन्न दृष्टिकोण अपनाए हुए हैं। रामभक्त कवियों में तुलसीदास का नाम अग्रगण्य है। कुछ आलोचक तुलसीदास को नारी के प्रति उदार और कुछ आलोचक अनुदार मानते हैं। ''प्रत्येक युग के कलाकार नारी–चित्रण में प्रायः उदार पाए जाते हैं किन्तु

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 6, Issue 2, February 2023|

|DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602025|

नारी–चित्रण में तुलसीदास बेहद अनुदार हैं।''[31] रामभक्त कवियों ने नारी की स्थिति को कई दृष्टिकोणों से नापा है–

(क) **नारीः आलौकिक रूप में पूज्यनीय** –

यह नारी वर्ग आराध्य से सम्बन्धित होने के कारण उदात्त अलौकिक एवं पूजनीय है। सीता ऐसी नारी का प्रतिनिधित्व है जो अपनी आलौकिकता के कारण पूजनीय है। रामभक्त तुलसीदास अपनी आराध्य देवी सीता के प्रति अत्यन्त उदार हैं। उसके दर्शन मात्र से ही मनुष्य के जन्म जन्मान्तरों के पाप धुल जाते हैं। यहाँ तक कि उसके विरह में तो तुलसी के आराध्य देव भी विह्वल हो इधर–उधर भटक रहे हैं –

''हे खग मृग, हे मधुकर स्रैनी। तुम देखी सीता मृगनैनी।''[32]

(ख) **नारीः लौकिक रूप में सम्मानीय** –

नारी का यह रूप लौकिक होकर भी परिवार और समाज के आदर्शों की परिधि में हर दृष्टि से सम्माननीय है। माँ कौशल्या, सुमित्रा व कैकेयी की वात्सल्यता, उर्मिला की त्यागपूर्ण कर्त्तव्यनिष्ठता, शबरी की अनन्य भक्ति, तारा व मन्दोदरी की सतीत्व भावना उन्हें सम्माननीय बनाती है। ''जीवन की विश्रृंखलताओं के मध्य उन्होंने ऐसी नारी का अंकन किया है जो गृह जीवन में त्याग, ममता, साधना और कर्त्तव्य का अभिषेक करती हैं।''[33]

(ग) **नारीः शोषित रूप में शोचनीय** –

उस समय नारी समाज में पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी एक विवश और अभिशप्त मूर्ति थी –

''कत विधि सूजी नारी जग माहीं। पराधीन सुपनेहुँ सुख नाही।''[34]

कई प्रसंगों में नारी को सहज ही मूर्ख, नासमझ और पुरूष दासी स्वीकारा गया है।

''अब मोहि आपनि किंकरि जानी। जदपि सहज जड़ नारी अयानी।''[35]

नारी की उन्मुक्तता को नारी के दुराचरण का रूप माना जाता था –

''महावृष्टि चलि फूटि किचारी। जिमि सुतंग भय विगरीहं नारी।।''[36]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 6, Issue 2, February 2023|

|DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602025|

(घ) नारीः कुलटा व कामिनी रूप में निन्दनीय –

सन्त कवियों की भान्ति रामभक्त कवि भी नारी को साधना मार्ग की सबसे बड़ी बाधा के रूप स्वीकारते हैं। उनके अनुसार वह त्रिगुणविनाशिनी व तप संयम विरोधिनी कही गयी है –

"पाप उलूक निकर सुखकारी, नारि निविड़ रजनी अधिकारी।।"[37]

उन्होंने नारी को विलास की सामग्री में गिना है। किन्तु उनके अन्तर के किसी कोने में नारी मर्यादा और पवित्रता के प्रति श्रद्धा और आदर का भाव सतत ही बना रहा।[38]

अंततः भक्ति युगीन काव्य में नारी सामाजिक एवं पारम्परिक बद्धता में रहते हुए सम्माननीय है किन्तु वासना प्रसवित कमनीयाचरण के कारण निन्दनीय है। उपास्य देवी सीता के रूप में सम्माननीय है तो पापाचरण करने वाली ताड़का के रूप में वधनीय अर्थात् वध के योग्य भी है। राधा के रूप में नारी प्रेम की पराकाष्ठा है व गोपियों के रूप में कर्मशीलता की परिचायक है। पद्यमावती ईश्वर मिलन हेतु बुद्धि की परिचायिका है और नागमती रूप में दुनिया धंधा का प्रतीक बनती है।

ग्रंथसूची

1. डॉ. कुसुम कक्कड़ः जैनेन्द्र का जीवन दर्शन, पृ. 164
2. डॉ. त्रिगुणायतः कबीर ग्रंथावली, पृ. 403
3. नामदेव, पृ. 401
4. डॉ. त्रिगुणायतः कबीर ग्रंथावली, पृ. 403
5. डॉ. कान्ति चन्द्र मिश्रः कबीर वाणी पीयूष अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 235
6. वही, पृ. 210
7. डॉ. त्रिगुणायतः कबीर ग्रंथावली, पृ. 210
8. डॉ. त्रिगुणायतः कबीर ग्रंथावली, पृ. 211
9. डॉ. कान्ति मिश्रः कबीर वाणी – पीयूष पूर्वोक्त, पृ. 52
10. वही, पृ. 78
11. डॉ. त्रिगुणायतः कबीर ग्रंथावली, पृ. 211
12. कबीर ग्रंथावली, पृ. 211
13. वही पृ. 211
14. डॉ. कान्ति चन्द्र शर्माः कबीर वाणी पीयूष, पृ. 47
15. कबीर ग्रंथावली, पर सं. 1

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 6, Issue 2, February 2023|

|DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602025|

16. कबीर ग्रंथावली पद सं. 2
17. डॉ. चौहानः कबीर साधना, पृ. 212
18. डॉ. त्रिगुणायतः कबीर ग्रंथावली सें उद्धृत
19. पूर्वोक्त
20. डॉ. कान्ति चन्द्र मिश्रः कबीर वाणी पीयूष, पृ. 204
21. आचार्य रामचन्द्र शुक्लः जायसी ग्रन्थावली संवत 2013, पृ. 301
22. कथा जो कहै आइ ओहि केरी। पांवरि होउं जनम भरि चेरी, जायसी ग्रंथावली, संवत 2013 पृ. 151
23. राज दिवस बस यह जिउ मोरै। लागौनिहोर कान्त अब मोरे।
यह तन जारौ छारकै, कहौ कि पवन उडाए
मुकेतेहि मारग उड़ि परै, कन्त धरै जहें पाँव।।''
आ. शुक्ल जायसी ग्रथावली, पृ. 155
24. जसोदा हरि पालने झुलावे, सूरदास : सूरसागर, ना. प्र. वाराणसी, पद 66
25. सूरसागर पद 833
26. नन्ददास ग्रन्थावली, पृ. 297
27. सूरदास : सूरसागर, पद 11716
28. सूरसागर ना. प्र. वाराणसी, 1029
29. पूर्वोक्त पद 1014
30. सूरदासः सूरसागर
31. डॉ. माता प्रसाद गुप्त : तुलसीदास, पृ. 307
32. तुलसीदासः रामचरित मानस : आरण्यकाण्ड दोहा 30/9 गीताप्रेस, गोरखपुर
33. उषा पाण्डेय : तुलसी की नारी भावना (उदयभानु सिंह द्वारा संपादित तुलसी में संकलित लेख) पृ. 156
34. तुलसीः रामचरित मानस पूर्वोक्त बालकाण्ड, पृ. 102
35. पूर्वोक्तः वही पृ. 120
36. पूर्वोक्तः किष्किंधा काण्ड, पृ. 415
37. पूर्वोक्तः अरण्यकाण्ड, पृ. 349
38. उषा पाण्डेयः तुलसी की नारी भावना, पूर्वोक्त. पृ. 164

INNO SPACE

SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor

7.54

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com